गुरु नानक - सबद १०८

कुदरति करि कै वसिआ सोइ ॥

रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ८३

कुदरति करि कै वसिआ सोइ ॥
वखतु वीचारे सु बंदा होइ ॥
कुदरति है कीमति नही पाइ ॥
जा कीमति पाइ त कही न जाइ ॥
सरै सरीअति करहि बीचारु ॥
बिनु बूझे कैसे पावहि पारु ॥
सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु ॥
जिह धिरि देखा तिह धिरि मउजूदु ॥१॥

सार: मनुष्य होना जागरूकता को अपनाने और केवल प्रवृत्ति या सामाजिक संस्कारों से आगे बढ़ने का नाम है। इसका अर्थ है ठहरना, सोचना और बिना सोचे-समझे प्रतिक्रिया देने के बजाय सजगता से उत्तर देना। इंसानियत को सिर्फ़ बुद्धिमत्ता या उपलब्धियों से नहीं बल्कि हमारी अंदरूनी स्थितियों और बाहरी परिस्थितियों की समझ से परिभाषित किया जाता है। इंसान होने के लिए ध्यान से आत्मनिरीक्षण करके अपने कामों की ज़िम्मेदारी लेना ज़रूरी है। अंततः इंसान होने का मतलब है जागरूकता को नैतिक और सहानुभूतिपूर्ण जीवन में बदलना, अपने जीवन को बेहतर बनाना और दूसरों के साथ संबंधों को मज़बूत करना।

कुदरति करि कै वसिआ सोइ ॥
सृष्टि के रूप में प्रकट होकर, सर्वव्यापी स्रोत उसी में निवास करता है। यह बताता है कि रचनात्मक सिद्धांत सृष्टि से अलग नहीं है बल्कि प्रत्येक रूप में स्पंदित होने वाली ऊर्जा है।

वखतु वीचारे सु बंदा होइ ॥

जो प्रत्येक क्षण के सार पर विचार करते हैं वह वास्तव में इंसान बन जाते हैं। यह दर्शाता है कि इंसान होना केवल जैविक अस्तित्व नहीं है बल्कि सजग आत्मचिंतन से उत्पन्न होने वाली चेतना है।

कुदरति है कीमति नही पाइ ॥

जो प्रकृति मौजूद है, उसका कोई मापा हुआ मूल्य नहीं लगाया जा सकता। यह ब्रह्मांड की जटिलताओं को समझने की हमारी विश्लेषणात्मक क्षमता की सीमा को दर्शाता है।

जा कीमति पाइ त कही न जाइ ॥

यदि कोई इसका मूल्य पहचान भी ले तब भी इसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह बताता है कि सृष्टि के सार को केवल अनुभव किया जा सकता है, उसकी सच में अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती।

सरै सरीअति करहि बीचारु ॥

धार्मिक आचार संहिता और सामाजिक कानूनों की जांच करें। यह आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि को कठोर सिद्धांतों से बदलने की मन की प्रवृत्ति को दिखाता है।

बिनु बूझे कैसे पावहि पारु ॥

बिना समझे कोई कैसे पार जा सकता है? यह बताता है कि जागरूकता धार्मिक या सामाजिक संरचनाओं से पैदा नहीं हो सकती, यह केवल अंतर्दृष्टि से ही जन्म ले सकती है।

सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु ॥

सच्चाई में विश्वास को प्रार्थना में झुकने वाला बनाओ और यही अपने विचारों का लक्ष्य ठहराओ। यह हमारे इरादों का मार्गदर्शन करने के लिए विनम्रता और ईमानदारी के साथ सामंजस्य बिठाने का सुझाव देता है।

जिह धिरि देखा तिह धिरि मउजूदु ॥१॥

जिस दिशा में भी मैं देखता हूँ, मुझे सर्वव्यापक उपस्थिति दिखाई देती है। यह अनुभूति बाहरी खोज के अंत और भीतर अद्वैत बोध की दृष्टि के जागरण का प्रतीक है। (१)

तत्त्व: गुरु नानक अस्तित्व की असीम प्रकृति और सृष्टि के भीतर निहित एकता पर ज़ोर देते हैं जिसे न तो मापा जा सकता है, न ही पकड़ा जा सकता है और न ही शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है। जबकि इंसान अक्सर जीवन को समझने के लिए प्रणाली, तर्क और संरचित तरीकों पर निर्भर रहते हैं, यह तरीके गहन समझ के बिना अधूरे रहते हैं। अंतिम वास्तविकता धार्मिक बहसों या अनुष्ठानों में नहीं बल्कि प्रकृति में सर्वव्यापी शक्ति को पहचानने में है। यह दृष्टिकोण केवल प्रथाओं के अभ्यासों से हटकर जीवित विश्वास की स्थिति की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है जहाँ हर पल की जागरूकता प्रार्थना की सच्ची अभिव्यक्ति बन जाती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com